सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष 2023 का अष्टम अंक आपके करकमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इसमें सर्वप्रथम महामण्डलेश्वर स्वामी महेश्वरानन्दपुरीजी द्वारा लिखित YOGA SUTRAS OF PATANJALI शोध लेख में पातंजलयोगसूत्र के प्रतिपाद्य की आधुनिक सन्दर्भ में उपयोगिता दर्शायी गयी है। तत्पश्चात् अन्या वुकादिन द्वारा लिखित Release, salvation, uplift and liberation in the classical medieval Vaiśeṣika and Nyāya शोध लेख में न्याय एवं वैशेषिक शास्त्रों में प्रतिपादित मोक्ष के स्वरूप एवं उसकी प्राप्ति के विविध सौपानों को प्रतिपादित किया गया है। तत्पश्चात् गोपीनाथ पारीक 'गोपेश' द्वारा लिखित 'रसेश्वरदर्शन' लेख में रसेश्वरदर्शन का आयुर्वेद दर्शन के रूप में प्रतिपादन कर पारद से ब्रह्म प्राप्ति का मार्ग स्पष्ट किया गया है। तत्पश्चात् देवर्षि कलानाथ शास्त्री द्वारा लिखित 'वेदकालीन उन्नत समाज' शोध लेख में वेदिककालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति के उत्कृष्ट स्वरूप का दिग्दर्शन कराया गया है। तत्पश्चात् डॉ. रामदेव साहू द्वारा लिखित 'मांगलिक योग एवं मंगली दोष' लेख में ज्योतिष शास्त्रोक्त मांगलिक योग एवं मंगली दोष की स्थिति प्रभाव एवं फल का विवेचन किया गया है। अन्त में स्व. डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर के 'राष्ट्रोपनिषत्' के कतिपय पद्य प्रकाशित किये गये हैं, जो गुरुशिष्यपरम्परा के गौरव को प्रदर्शित करने के साथ साथ आत्मचिन्तन की प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्वक हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

-डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा